اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है **:** जब जुमा'रात का दिन आता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह जुमा'रात और शबे जुमुआ नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम लिखते हैं।

(ابن عساکر، علی بن محمد بن احمد بن ادریس...الخ، ۱۴۲/۴۳، رقم: ۵۰۱۲)

ज़ात हुई इन्तिख़ाब वस्फ़ हुवे ला जवाब
नाम हुवा मुस्त़फ़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं **:**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر لِلطَّبَرَانِی ج۶ ص ۱۸۵ حديث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा । ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा । ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा । ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा । ۞ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْبِ، اُذْكُرُوا اللّٰهَ، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा । ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा । ۞ देख कर बयान करूंगा । ۞ पारह 14 सूरतुन्नहल, आयत 125 : ﴿اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीहत से) और बुख़ारी शरीफ़ (की हदीस 3461) में वारिद इस फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَ لَوْ اٰيَةً "पहुंचा दो मेरी तरफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो" में दिये हुवे अहकाम की पैरवी करूंगा । ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा । ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा । ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आमात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा । ۞ क़हक़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा । ۞ नज़र की हिफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर हत्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्तिक़्बाले रमज़ान और ख़ुत़बए मह़बूबे रह़मान

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि रह़मते आ़लमिय्यान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने माहे शा'बान के आख़िरी दिन हमें ख़ुत़बा इरशाद फ़रमाया कि ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अ़ज़मत व बरकत वाला महीना जल्वागर हो रहा है, वोह महीना जिस में एक रात ऐसी भी है कि जो हज़ार महीनों से बेहतर है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस माहे मुबारक के रोज़े फ़र्ज़ फ़रमाए हैं। इस की रात में क़ियाम (या'नी तरावीह़ अदा करना) सुन्नत है, जो इस में नेकी का काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में फ़र्ज़ अदा किया और जिस ने इस में फ़र्ज़ अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में 70 फ़र्ज़ अदा किये। येह सब्र का महीना है और सब्र का सवाब जन्नत है, येह ग़म ख़्वारी व भलाई का महीना है और इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ाया जाता है। जो इस में रोज़ेदार को इफ़्त़ार कराए तो येह उस के गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है, उसे आग से आज़ादी बख़्शी जाएगी और उस इफ़्त़ार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा, बिग़ैर इस के कि उस के अज्र में कुछ कमी हो। हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर शख़्स वोह चीज़ नहीं पाता जिस से रोज़ा इफ़्त़ार करवाए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह सवाब तो उस शख़्स को देगा जो एक खजूर या एक घूंट पानी या एक घूंट दूध से रोज़ा इफ़्त़ार करवाए। येह वोह महीना है कि जिस का अव्वल (या'नी इब्तिदाई 10 दिन) रह़मत, दरमियान (या'नी दरमियाने 10 दिन) मग़फ़िरत है और आख़िर (या'नी आख़िरी 10 दिन) जहन्नम से आज़ादी है। जो अपने ग़ुलाम (या'नी मातह़त) से इस महीने में काम कम ले, **अल्लाह** तआ़ला उसे बख़्श देगा और उसे जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा। जिस ने रोज़ेदार को पेट भर कर खिलाया, **अल्लाह** तआ़ला उस शख़्स को मेरे ह़ौज़ से एक ऐसा घूंट पिलाएगा कि (जिसे पीने के बा'द) वोह कभी प्यासा न होगा, यहां तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाए।

(ابن خزیمہ، کتاب الصیام، ۳/۱۹۱، حدیث:۱۸۸۷)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : माहे रमज़ान का नफ़्ल दूसरे महीनों के फ़र्ज़ के बराबर है और इस माह की फ़र्ज़ इबादत दूसरे माह के 70 फ़राइज़ के मिस्ल है । (मज़ीद फ़रमाते हैं) माहे रमज़ान के 3 अ़शरे हैं : पहले अ़शरे में रब तआ़ला मोमिनों पर ख़ास रह़मतें फ़रमाता है जिस से उन्हें रोज़ा, तरावीह़ की हिम्मत होती है और आइन्दा मिलने वाली ने'मतों की अहलिय्यत पैदा होती है । दूसरे अ़शरे में तमाम सग़ीरा गुनाहों की मुआ़फ़ी है, जो जहन्नम से आज़ादी और जन्नत में दाख़िले का सबब है । तीसरे अ़शरे में रोज़ेदारों के जन्नती होने का ए'लान, वहां के दाख़िले का (गोया) वीज़ा और पासपोर्ट जारी किया जाता है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 140, 141, बित्तग़य्युर क़लील व मुल्तक़तन)

मरह़बा सद मरह़बा ! फिर आमदे रमज़ान है
खिल उठे मुरझाए दिल ताज़ा हुवा ईमान है
या ख़ुदा हम आ़सियों पर येह बड़ा एह़सान है
ज़िन्दगी में फिर अ़ता हम को किया रमज़ान है
या इलाही ! तू मदीने में कभी रमज़ां दिखा
*मुद्दतों से दिल मे येह **अ़त्तार** के अरमान है*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 705, 706)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحَانَ الله عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस महीने या'नी रमज़ानुल मुबारक से किस क़दर अ़क़ीदत व उल्फ़त थी कि जूंही इस माहे मुक़द्दसा की आमद के आसारे पुर अन्वार नज़र आते तो रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद भी इस बरकत वाले महीने का इन्तिहाई शानो शौकत के साथ इस्तिक़्बाल फ़रमाते और अपने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सामने भी इस मुबारक महीने की शानो अ़ज़मत, फ़ज़ाइलो बरकात और दीगर दिलकश औसाफ़ को बयान फ़रमा कर इस की अहम्मिय्यत को वाज़ेह़ फ़रमाते और उन्हें भी मुख़्तलिफ़ नेक आ'माल करने

का मदनी ज़ेहन अ़ता फ़रमाते। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी चूंकि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़क़ीक़ी दीवाने और सच्चे आ़शिक़ाने रमज़ान थे, लिहाज़ा येह ह़ज़रात भी अपने आक़ा व मौला صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ और मह़ब्बते रमज़ान में मुसलमानों को मेहमाने रह़मान की आमद की मुबारक बाद दिया करते नीज़ उन्हें रोज़ों की अदाएगी, शब बेदारी और राहे ख़ुदा में ख़र्च करने की तरग़ीबें भी इरशाद फ़रमाते। चुनान्चे,

फ़ारूक़े आ'ज़म और इस्तिक़्बाले रमज़ान

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाया करते : उस महीने को ख़ुश आमदीद है जो हमें पाक करने वाला है। पूरा रमज़ान ख़ैर ही ख़ैर है, ख़्वाह दिन का रोज़ा हो या रात का क़ियाम। इस महीने में ख़र्च करना जिहाद में ख़र्च करने का दरजा रखता है।

(تَنْبِیْہُ الْغَافِلِین، باب فضل شہر رمضان، ص۱۷۷، رقم ۴۴۷)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की तह़रीर का ख़ुलासा है कि माहे रमज़ान की आमद पर ख़ुश होना, एक दूसरे को मुबारक बाद देना सुन्नत है और जिस की आमद पर ख़ुशी होनी चाहिये उस के जाने पर ग़म भी होना चाहिये। इसी लिये अक्सर मुसलमान जुमुअ़तुल विदाअ़ को ग़मगीन और अश्कबार होते हैं और ख़ु–त़बा इस दिन में कुछ अल वदाई कलिमात कहते हैं ताकि मुसलमान बाक़ी घड़ियों को ग़नीमत जान कर नेकियों में और ज़ियादा कोशिश करें। (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 137, मुलख़्ख़सन)

ऐ आ़शिक़ाने रमज़ान ! आप सब को मुबारक हो اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ बहुत जल्द रमज़ानुल मुबारक अपने दामने करम में रह़मतों और मग़फ़िरतों के परवाने लिये हम गुनाहगारों के दरमियान जल्वागर होने वाला है कि जिस में नफ़्ली इबादात का सवाब फ़र्ज़ों के बराबर और फ़र्ज़ों का सवाब सत्तर गुना बढ़ा दिया जाता है, रोज़ेदारों के वारे ही नियारे हो जाते हैं और बे शुमार लोगों को जहन्नम से रिहाई के परवाने तक़्सीम किये जाते हैं। लिहाज़ा माहे रमज़ानुल

मुबारक की आमद के मौक़अ़ पर ख़ुद भी ख़ुशियां मनाइये और दूसरे मुसलमानों को भी ख़ूब ख़ूब मुबारक बाद पेश कीजिये, नीज़ इस महीने की आमद से क़ब्ल दुन्यवी मुआ़मलात से फ़राग़त पा कर नमाज़, रोज़ों, तिलावते क़ुरआन, तरावीह़ और पूरे माह या कम अज़ कम आख़िरी अ़शरे के इजतिमाई ए'तिकाफ़ की बरकतें लूटिये और अपने लिये राहे जन्नत को आसान कीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी मस्जिद भरो तह़रीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल में भी रह़मतों और मग़फ़िरतों वाले इस मुक़द्दस मेहमान की आमद पर ख़ुशी का आ़लम होता है और इस का भरपूर त़रीक़े से इस्तिक़्बाल किया जाता है बल्कि कई मक़ामात पर कसीर इस्लामी भाई इस माहे मुबारक को ज़ियादा से ज़ियादा नेकियों में गुज़ारने के लिये दा'वते इस्लामी के तह़त पूरे माह का ए'तिकाफ़ भी करते हैं नीज़ जब येह मेहमान रुख़्सत होता है तो अश्कबार आंखों से इसे **"अलविदाअ़"** भी किया जाता है।

नज़्दीक आ रहा है रमज़ान का महीना
साह़िल से ह़ाजियों का फिर आ लगा सफ़ीना
आक़ा ! न टूट जाए येह दिल का आबगीना
बुलवाइये मदीना दिखलाइये मदीना

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 190)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रमज़ान को रमज़ान कहने की वुजूहात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस माह की शानो अ़ज़मत के पेशे नज़र उ़लमाए किराम ने इस के कई अस्माए मुबारका बयान फ़रमाए हैं मगर इन में **"रमज़ान"** सब से ज़ियादा मश्हूरो मा'रूफ़ है। आइये ! इस महीने को **"रमज़ान"** कहने की चन्द वुजूहात भी सुनते हैं। चुनान्चे,

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **"रमज़ान"** या तो **"रह़मान"** की त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम

है, चूंकि इस महीने में दिन रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत होती है, लिहाज़ा इसे "**शहरे रमज़ान**" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महीना कहा जाता है, जैसे मस्जिद व का'बे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का घर कहते हैं कि वहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ही काम होते हैं, ऐसे ही रमज़ान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महीना है कि इस महीने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ही काम होते हैं। रोज़ा, तरावीह़ वग़ैरा तो हैं ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मगर ब ह़ालते रोज़ा जो जाइज़ नौकरी और जाइज़ तिजारत वग़ैरा की जाती है वोह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के काम क़रार पाते हैं। इस लिये इस माह का नाम रमज़ान या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महीना है या येह "رَمْضَاءٌ" से निकाला गया है। "رَمْضَاءٌ" मौसिमे ख़ज़ां की बारिश को कहते हैं, जिस से ज़मीन धुल जाती है और "**रबीअ़**" की फ़स्ल ख़ूब होती है। चूंकि येह महीना भी दिल के गर्दो ग़ुबार धो देता है और इस से आ'माल की खेती हरी भरी रहती है, इस लिये इसे रमज़ान कहते हैं या येह "**रम्ज़**" से बना जिस के मा'ना है "**गर्मी या जलना**" चूंकि इस में मुसलमान भूक प्यास की तपिश बरदाश्त करते हैं या येह गुनाहों को जला डालता है, इस लिये इसे "**रमज़ान**" कहा जाता है।

मज़ीद फ़रमाते हैं कि लफ़्ज़े रमज़ान में 5 हुरूफ़ हैं : ر، م، ض، ا، ن "ر" से मुराद रह़मते इलाही, "میم" से मुराद मह़ब्बते इलाही, "ض" से मुराद ज़माने इलाही, "الف" से अमाने इलाही और "ن" से नूरे इलाही। रमज़ान में 5 इ़बादात ख़ुसूसिय्यत के साथ की जाती हैं। (1) रोज़ा (2) तरावीह़ (3) तिलावते क़ुरआन (4) ए'तिकाफ़ और (5) शबे क़द्र में इ़बादात। तो जो कोई सिद्क़े दिल से येह 5 इ़बादात कर ले तो वोह इन 5 इन्आ़मात का मुस्तह़िक़ है। (तफ़्सीरे नईमी, पा. 2, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 185, स. 204 ता 209, मुल्तक़तन व बित्तग़य्युर क़लील)

अब्रे रह़मत छा गया है और समां है नूर नूर
फ़ज़्ले रब से मग़फ़िरत का हो गया सामान है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 705)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे ग़ुफ़रान हम गुनाहगारों के लिये ख़ुदा तआ़ला की त़रफ़ से अ़त़ा किया गया एक अ़ज़ीमुश्शान तोह़फ़ा है । इस मुक़द्दस मेहमान की आमद तो क्या होती है आ़शिक़ाने रमज़ान की तो ख़ुशियों को चार चांद लग जाते हैं, अन्वारे रमज़ान की रौशनियों से फ़ज़ा नूर बार हो जाती है, इबादत का ज़ौक़ो शौक़ कई गुना बढ़ जाता है, रोज़े रखने, तरावीह़ की सआ़दत पाने, ख़त्मे क़ुरआन की मह़ाफ़िल सजाने और शिर्कत फ़रमाने, सह़री व इफ़्त़ारी करने करवाने, ज़कात व फ़ित्रात, उ़श्र व सदक़ात और ख़ैरात व मदनी अ़ति़य्यात अदा करने करवाने, तिलावते क़ुरआन करने, रुकूअ़ व सुजूद में मश्ग़ूल रहने और मसाजिद को आबाद करने का ख़ास एहतिमाम किया जाता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अपनी ज़बाने ह़क़्क़े तर्जमान से मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर माहे रमज़ान की ख़ुसूसिय्यात व नवाज़िशात का तज़किरा करते हुवे इस में ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां करने और बारगाहे इलाही से तक़्सीम होने वाले इन्आ़मात ह़ासिल करने की तरग़ीब दिलाई है । आइये ! आमदे रमज़ानुल मुबारक और इस की बरकात पर मुश्तमिल 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं और निय्यत करते हैं कि ख़ूब ख़ूब नेकियों के ज़रीए़ इस माहे मुबारक का भरपूर इस्तिक़्बाल करेंगे । चुनान्चे,

जन्नती ने'मतें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रोबर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब रमज़ानुल मुबारक की पहली रात आती है तो आसमानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आख़िरी रात तक उन में से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता, जो बन्दए मोमिन इस महीने की किसी रात में नमाज़ पढ़ता है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर सज्दे के बदले पन्द्रह सौ नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में सुर्ख़ याक़ूत का एक घर बना दिया जाता है जिस के साठ हज़ार दरवाज़े होते हैं और हर दरवाज़े पर सोने की बनावट होगी जिन पर सुर्ख़ याक़ूत जड़े होंगे, जब बन्दा रमज़ानुल मुबारक के पहले दिन का रोज़ा रखता है

तो उस के गुज़श्ता रमज़ान से ले कर इस दिन तक किये गए (सग़ीरा) गुनाहों को बख़्श दिया जाता है, उस के लिये रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते नमाज़े फ़ज्र से गुरूबे आफ़्ताब तक इस्तिग़फ़ार करते हैं, उसे रमज़ाने के हर दिन और हर रात में सज्दा करने पर जन्नत में एक ऐसा दरख़्त अ़ता किया जाता है कि जिस के साए में कोई सुवार पांच सौ साल तक चलता रहे ।

(شعب الایمان، فضائل شہر رمضان، باب فی الصیام ، ۳/ ۳۱۴، حدیث: ۳۶۳۵)

बरकतों वाला महीना

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रमज़ान की आमद के मौक़अ़ पर एक दिन इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे पास बरकत वाला महीना रमज़ान आ गया कि जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ग़नी फ़रमाता और (तुम पर) रह़मत नाज़िल फ़रमाता है, गुनाहों को मिटाता और दुआ़ क़बूल फ़रमाता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी नेकियों की रग़बत देखता है और फ़िरिश्तों के सामने तुम पर फ़ख़्र फ़रमाता है, लिहाज़ा इस महीने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अच्छे आ'माल पेश करो क्यूंकि बदबख़्त वोही है जो इस महीने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मह़रूम रहा ।

(مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب فی شهور البرکة وفضل شهر رمضان ، ۳/ ۳۴۴، رقم: ۴۷۸۳)

या ख़ुदा माहे रमज़ां के सदक़े सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे
नेक बन जाऊं जी चाहता है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 136)

जन्नती हूरें

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना कि बेशक जन्नत को एक साल से दूसरे साल तक माहे रमज़ान की आमद के लिये सजाया जाता है, जब रमज़ानुल मुबारक की पहली रात तशरीफ़ लाती है तो अ़र्श के नीचे से एक हवा चलती है जिसे मुसीरह कहा जाता है,

(इस हवा के चलने से) जन्नत के पत्ते और दरवाज़ों के पट हिलने लगते हैं और ऐसी दिलकश आवाज़ पैदा होती है कि इस से ज़ियादा ख़ूब सूरत आवाज़ किसी ने न सुनी होगी, फिर बड़ी आंखों वाली हूरें बाहर निकलती हैं और जन्नत की बालकूनियों पर खड़ी हो कर यूं पुकारती हैं : कोई है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पुकारने वाला ताकि वोह उस की (हम से) शादी कराए ? फिर वोह पूछती हैं : ऐ रिज़्वाने जन्नत ! येह कौन सी रात है ? तो ह़ज़रते सय्यिदुना रिज़्वान عَلَيْهِ السَّلَام लब्बैक कहते हुवे जवाब देते हैं : येह माहे रमज़ान की पहली रात है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : ऐ रिज़्वान ! जन्नत के दरवाज़े खोल दो, ऐ मालिक ! जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दो, ऐ जिब्रईल ! ज़मीन पर जाओ और सरकश शयातीन को ज़न्जीरों से बांध कर समुन्दर में डाल दो ताकि वोह मेरे ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत के रोज़ों में फ़साद न डालें । फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रमज़ान की हर रात में एक मुनादी को 3 मरतबा येह निदा करने का हुक्म इरशाद फ़रमाता है : है कोई मांगने वाला कि जिस की मुराद मैं उसे अ़त़ा करूं ? है कोई तौबा करने वाला कि जिस की तौबा मैं क़बूल करूं ? है कोई मग़फ़िरत चाहने वाला जिसे मैं बख़्श दूं ?

(الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، الترغیب فی صیام رمضان احتساباً...الخ، ۲/۲۰، حدیث: ۱۴۹۹ ملتقطاً)

हर घड़ी रह़मत भरी है हर त़रफ़ हैं बरकतें
माहे रमज़ां रह़मतों और बरकतों की कान है
आ़सियों की मग़फ़िरत का लेकर आया है पयाम
झूम जाओ मुजरिमो ! रमज़ां महे ग़ुफ़रान है
भाइयो बहनो ! करो सब नेकियों पर नेकियां
पड़ गए दोज़ख़ पे ताले क़ैद में शैत़ान है
भाइयो बहनो ! गुनाहों से सभी तौबा करो
ख़ुल्द के दर खुल गए हैं दाख़िला आसान है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 705 / 706)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के कुरबान कि वोह अपने मा'सूम फ़िरिश्तों को इस माहे मुक़द्दसा की पहली शब में जन्नत के दरवाज़े खोलने, जहन्नम के दरवाज़े बन्द करने और शयात़ीन को बेड़ियों में जकड़ देने के अह़कामात इरशाद फ़रमाता है नीज़ रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से एक निदा देने वाला लोगों को बारगाहे ख़ुदावन्दी में मुरादें मांगने, तौबा करने और बख़्शिश व मग़फ़िरत का सुवाल करने की त़रफ़ रहनुमाई करता है । लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपने दुन्यवी मुआ़मलात में उल्झे रहने के बजाए रमज़ानुल मुबारक की आमद से पहले पहले अपने आप को ज़रूरी कामों से किसी ह़द तक फ़ारिग़ कर लें और फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ रमज़ानुल मुबारक के ख़ुसूसी फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल करने के लिये इस में सुनन व मुस्तह़ब्बात, तिलावते क़ुरआने करीम, तरावीह़ व ए'तिकाफ़ और दीगर इ़बादात की कसरत करें बल्कि दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले पूरे माहे रमज़ान या कम अज़ कम आख़िरी अ़शरे के ए'तिकाफ़ में बैठने की सआ़दत ह़ासिल कर के माहे सियाम के क़द्र दानों में शामिल हो जाएं, रोज़ाना दिन और बा'दे तरावीह़ होने वाले 2 मदनी मुज़ाकरों में अव्वल ता आख़िर शामिल हो कर इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने वाले आ़शिक़ाने रसूल की फ़ेह्‌रिस्त में हम भी अपना नाम लिखवा लें और रब तआ़ला को राज़ी कर के बख़्शिश व मग़फ़िरत के ह़क़दार बन जाएं । आइये ! तरग़ीब के लिये प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ौक़े इ़बादत के बारे में तीन रिवायात सुनते हैं ताकि इन्हें सुन कर हम भी अपना मदनी ज़ेह्‌न बनाएं और इस माहे मुबारक की आमद से पहले पहले अपने आप को इ़बादत व ए'तिकाफ़ के लिये तय्यार कर लें ।

1. اِذَا دَخَلَ شَهْرُ رَمَضَانَ شَدَّ مِئْزَرَهُ ثُمَّ لَمْ يَأْتِ فِرَاشَهُ حَتّٰى يَنْسَلِخَ जब माहे रमज़ान तशरीफ़ लाता तो नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इ़बादते इलाही के लिये कमर बस्ता हो जाते फिर सारा महीना अपने बिस्तरे मुनव्वर पर तशरीफ़ न लाते । (شعب الایمان، باب فی الصیام، فضائل شہر رمضان، ۳/۳۱۰، حدیث: ۳۶۲۴)

2. كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا دَخَلَ رَمَضَانُ تَغَيَّرَ لَوْنُهُ وَكَثُرَتْ صَلَاتُهُ وَابْتَهَلَ فِي الدُّعَاءِ وَاَشْفَقَ مِنْهُ जब माहे रमज़ान तशरीफ़ लाता तो शाहे बनी आदम, रसूले मोह्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रंग मुबारक मुतग़य्यर (या'नी तब्दील) हो जाता, नमाज़ की कसरत फ़रमाते, गिड़गिड़ा कर दुआएं मांगते और ख़ौफ़े ख़ुदा आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तारी रहता।

(شعب الایمان، باب فی الصیام، فضائل شہر رمضان، ۳/۳۱۰، حدیث: ۳۶۲۵)

3. اِذَا دَخَلَ شَهْرُ رَمَضَانَ اَطْلَقَ كُلَّ اَسِيْرٍ وَاَعْطٰى كُلَّ سَائِلٍ जब माहे रमज़ान आता तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर क़ैदी को रिहा कर देते और हर साइल को अ़ता फ़रमाते।

(شعب الایمان، باب فی الصیام، فضائل شہر رمضان، ۳/۳۱۱، حدیث: ۳۶۲۹)

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्तफ़ा ने दरया बहा दिये हैं
मेरे करीम से गर क़तरा किसी ने मांगा
दरया बहा दिये हैं दुर बे बहा दिये हैं

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 102)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

12 मदनी कामों में से एक मदनी काम "अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत"

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रमज़ानुल मुबारक की बरकात से फ़ैज़याब होने, इस माह में ख़ुद भी ब कसरत इ़बादात करने और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी इस की तरग़ीब दिलाने बल्कि अपने अ़लाक़े में भी इस की धूमें मचाने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये ज़ैली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से हफ़्तावार एक मदनी काम **''अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत''** भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना निहायत ही अ़ज़ीमुश्शान काम है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि शाहे आदम व बनी आदम, रसूले मोहतशम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : जिहाद की चार क़िस्में हैं : (1) नेकी का हुक्म देना (2) बुराई से मन्अ़ करना (3) सब्र के मक़ाम पर सच कहना और (4) फ़ासिक़ों से बुग़्ज़ रखना। (फिर इरशाद फ़रमाया) जिस ने नेकी का हुक्म दिया उस ने मोमिनीन के हाथ मज़बूत़ किये और जिस ने बुराई से मन्अ़ किया उस ने फ़ासिक़ों की नाक ख़ाक आलूद की। (حِلْیَةُ الْاَولیاء، محمد بن سوقة، ۵/۱۱، حدیث: ۲۱۳۰)

नीज़ एक ह़दीस में है कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : लोगों में बेहतर कौन है ? इरशाद फ़रमाया : अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा डरने वाला, रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी ज़ियादा करने वाला और बहुत ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला। (شعب الایمان، باب فی صلة الارحام، ۶/۲۲۰، حدیث: ۷۹۵۰)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! "**अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत**" की बरकत से अब तक कई लोगों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो चुका है। आइये ! बत़ौरे तरग़ीब एक ऐसी मदनी बहार सुनते हैं जिस में "**अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत**" की बरकत से एक शराबी न सिर्फ़ शराब नोशी और दीगर गुनाहों से ताइब हो गया बल्कि सुन्नतों पर अ़मल करने वाला भी बन गया। चुनान्चे,

निय्यत साफ़ मन्ज़िल आसान

आ़शिक़ाने रसूल का एक मदनी क़ाफ़िला कपड़वंज (गुजरात, हिन्द) पहुंचा, "**अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत**" के दौरान एक शराबी से मुड भेड़ हो गई, आ़शिक़ाने रसूल ने उस पर ख़ूब इनफ़िरादी कोशिश की, जब उस ने सब्ज़ सब्ज़ इमामे वालों की शफ़्क़तें और प्यार देखा तो हाथों हाथ उन के साथ चल पड़ा, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से गुनाहों से सच्ची तौबा की, दाढ़ी मुबारक बढ़ा ली, सब्ज़ इमामे का ताज भी सर पर सज गया, मदनी लिबास का भी ज़ेह्न बन गया, 6 दिन तक मदनी क़ाफ़िले में

सफ़र की सआ़दत ह़ासिल कर सका, मज़ीद 92 दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की मगर सफ़र के अख़राजात न थे । एक दिन एक रिश्तेदार से मुलाक़ात हो गई, उस ने जब मुआ़शरे के बदनाम और शराबी को दाढ़ी, सब्ज़ सब्ज़ इमामे और मदनी लिबास में देखा तो देखता रह गया, जब उस को बताया गया कि येह सब मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत है और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अस्बाब हो जाने की सूरत में मज़ीद 92 दिन के सफ़र का पुख़्ता इरादा है । तो उस रिश्तेदार ने कहा : पैसों कि फ़िक्र मत करो ! 92 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र का ख़र्च मुझ से क़बूल कर लो और साथ में 92 दिन तक घर के अख़राजात भी अपने ज़िम्मे लेता हूं । यूं वोह दीवाना 92 दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बन गया ।

या ख़ुदा ! निकलूं मैं मदनी क़ाफ़िलों के साथ काश !
सुन्नतों की तरबिय्यत के वासिते़ फिर जल्द तर !
ख़ूब ख़िदमत सुन्नतों की हम सदा करते रहें
मदनी माह़ोल ऐ ख़ुदा हम से न छूटे उ़म्र भर

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 637, 638)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि कुछ ही दिनों बा'द रह़मतों और बरकतों वाला अ़ज़ीमुश्शान महीना आने ही वाला है जो हम गुनाहगारों की बख़्शिश का सामान लिये 11 माह बा'द सिर्फ़ 29 या 30 दिन के लिये तशरीफ़ लाता है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो कर इस माह की ज़ियादा से ज़ियादा ता'ज़ीमो तौक़ीर बजा लाएं नीज़ नमाज़ों, रोज़ों, तिलावते क़ुरआन, ज़िक्रो अज़्कार, दुरूदो सलाम, तरावीह़, ह़म्दो ना'त व मन्क़बत, शब बेदारी, सलातुत्तस्बीह़, गिरया व ज़ारी और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर के रात दिन बरसने वाली रह़मत की छमाछम बारिश से फ़ैज़ ह़ासिल करें । यक़ीनन ख़ुश नसीब हैं वोह मुसलमान जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस पाकीज़ा व मुक़द्दस मेहमान की क़द्र करते और इस का अदबो एह़तिराम

बजा लाते हैं। आइये ! एह़तिरामे रमज़ान की बरकात पर मुश्तमिल एक ऐसे ग़ैर मुस्लिम की ह़िकायत सुनिये जिसे एह़तिरामे रमज़ान ही की वज्ह से ईमान की दौलत से माला माल कर दिया गया। सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये। चुनान्चे,

एह़तिरामे रमज़ान और बख़्शिश का सामान

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी तस्नीफ़ "**फ़ैज़ाने रमज़ान**" के सफ़ह़ा 909 पर नक़्ल फ़रमाते हैं कि बुख़ारा में एक ग़ैर मुस्लिम रहता था, एक मरतबा रमज़ान शरीफ़ में वोह अपने बेटे के साथ मुसलमानों के बाज़ार से गुज़र रहा था। उस के बेटे ने कोई चीज़ ए'लानिया त़ौर पर (या'नी खुले आ़म) खानी शुरूअ़ कर दी। उस ने जब येह देखा तो अपने बेटे को एक त़मांचा रसीद कर दिया और ख़ूब डांट कर कहा : तुझे रमज़ानुल मुबारक के महीने में मुसलमानों के बाज़ार में खाते हुवे शर्म नहीं आती ? लड़के ने जवाब दिया : अब्बा जान ! आप भी तो रमज़ान शरीफ़ में खाते हैं। वालिद ने कहा : मैं मुसलमानों के सामने नहीं अपने घर के अन्दर छुप कर खाता हूं, इस माहे मुबारक की बे हुर्मती नहीं करता। कुछ अ़र्से बा'द उस शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया। किसी ने ख़्वाब में उस को जन्नत में टहलते हुवे देखा तो ह़ैरत से पूछा : तू तो ग़ैर मुस्लिम था, जन्नत में कैसे आ गया ? कहने लगा : वाक़ेई मैं ग़ैर मुस्लिम था, लेकिन जब मौत का वक़्त क़रीब आया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एह़तिरामे रमज़ान की बरकत से मुझे ईमान की दौलत और मरने के बा'द जन्नत से सरफ़राज़ फ़रमाया।

जब कहा इ़स्यां से मैं ने सख़्त लाचारों में हूं
जिन के पल्ले कुछ नहीं है उन ख़रीदारों में हूं
तेरी रह़मत के लिये शामिल गुनहगारों में हूं
बोल उठ्ठी रह़मत न घबरा मैं मददगारों में हूं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने ! रमज़ानुल मुबारक की ता'ज़ीम के सबब एक गै़र मुस्लिम को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने न सिर्फ़ दौलते ईमान से नवाज़ दिया बल्कि उसे जन्नत में भी दाखि़ल फ़रमा दिया । इस वाक़िए से खुसूसन उन ग़ाफ़िल मुसलमानों को दर्से इब्रत हासिल करना चाहिये जो मुसलमान होने के बा वुजूद रमज़ानुल मुबारक का बिल्कुल एहतिराम नहीं करते और गर्मी की शिद्दत का बहाना बना कर مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ रोज़े क़ज़ा कर डालते हैं, फिर चोरी और सीना ज़ोरी यूं कि रोज़ादारों के सामने ही सिग्रेट के कश लगाते, पान, गुटके, मैन पूरियां वग़ैरा अश्या चबाते हत्ता कि बा'ज़ तो इतने बेबाक व बे मुरव्वत होते हैं कि सरे आ़म मश्रूबात पीते बल्कि बिरयानियां और समोसे वग़ैरा खाते भी नहीं शर्माते । यूं ही बा'ज़ नादान रोज़ा रखने के बा वुजूद مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ ताश, शत्रंज, लुड्डो, वीडियो गेम्ज़ खेलने, फ़िल्में ड्रामे देखने और गाने बाजे सुनने वग़ैरा बुराइयों से बाज़ नहीं आते । ऐसों को चाहिये कि वोह सन्जीदगी के साथ अपनी मौत, उस की तकालीफ़ नीज़ क़ब्रो ह़श्र के मुआ़मलात पर ग़ौर करें और सोचें कि माहे रमज़ान की ना क़द्री और इस का तक़द्दुस पामाल करने के सबब अगर अ़ज़ाबे क़ब्र या अ़ज़ाबे जहन्नम में मुब्तला कर दिया गया तो हमारे नर्म व नाज़ुक जिस्म रब तआ़ला के अ़ज़ाबे शदीद को कैसे सह सकेंगे । याद रखिये ! माहे रमज़ान की बे हुर्मती करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का सबब है ।

मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 693 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने रमज़ान**" के सफ़हा 89 से रमज़ानुल मुबारक की बे हुर्मती करने वाले एक शख़्स का इब्रतनाक वाक़िआ़ सुनिये और इब्रत के मदनी फूल चुनिये । चुनान्चे,

रमज़ान की बे हुर्मती की सज़ा

मन्क़ूल है : एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे खुदा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ज़ियारते कुबूर के लिये कूफ़ा के क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए । वहां एक ताज़ा क़ब्र पर नज़र पड़ी । आप كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को उस के ह़ालात मा'लूम करने की ख़्वाहिश हुई । चुनान्चे,

बारगाहे खुदावन्दी में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस मय्यित के ह़ालात मुझ पर मुन्कशिफ़ (या'नी ज़ाहिर) फ़रमा । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप की इल्तिजा फ़ौरन क़ुबूल हो गई और देखते ही देखते आप के और उस मुर्दे के दरमियान जितने पर्दे थे तमाम उठा दिये गए । अब एक क़ब्र का भयानक मन्ज़र आप के सामने था । क्या देखते हैं कि मुर्दा आग की लपेट में है और रो रो कर आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से इस त़रह़ फ़रयाद कर रहा है : يَا عَلِيُّ! اَنَا غَرِيْقٌ فِى النَّارِ وَحَرِيْقٌ فِى النَّارِ ऐ अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ! मैं आग में डूबा हुवा हूं और आग में जल रहा हूं । क़ब्र के देहशत नाक मन्ज़र और मुर्दे की दर्दनाक पुकार ने ह़ैदरे कर्रार كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को बे क़रार कर दिया । आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने रह़मत वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दरबार में हाथ उठा दिये और निहायत ही आ़जिज़ी के साथ उस मय्यित की बख़्शिश के लिये दरख़ास्त पेश की । ग़ैब से आवाज़ आई : ऐ अ़ली (كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ! आप इस की सिफ़ारिश न ही फ़रमाएं क्यूंकि रोज़े रखने के बा वुजूद येह शख़्स रमज़ानुल मुबारक की बे हुर्मती करता, रमज़ानुल मुबारक में भी गुनाहों से बाज़ न आता था । दिन को रोज़े तो रख लेता मगर रातों को गुनाहों में मुब्तला रहता था ।

मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم येह सुन कर और भी रन्जीदा हो गए और सज्दे में गिर कर रो रो कर अ़र्ज़ करने लगे : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरी लाज तेरे हाथ में है, इस बन्दे ने बड़ी उम्मीद के साथ मुझे पुकारा है, मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! तू मुझे इस के आगे रुस्वा न फ़रमा, इस की बे बसी पर रह़म फ़रमा दे और इस बेचारे को बख़्श दे । ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم रो रो कर मुनाजात कर रहे थे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत का दरया जोश में आ गया और निदा आई, ऐ अ़ली ! हम ने तुम्हारी शिकस्ता दिली (या'नी उदासी) के सबब इसे बख़्श दिया । चुनान्चे, उस मुर्दे पर से अ़ज़ाब उठा लिया गया ।

(انیس الواعظین، المجلس الثانی فی الایمان والصلاۃ وصوم رمضان، ص۲۶-۲۵)

मग़्फ़िरत करवाइये जन्नत में ले के जाइये
वासित़ा ह़सनैन का मौला अ़ली मुश्किल कुशा

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 523)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने ! कि जिस बदबख़्त ने रमज़ानुल मुबारक की ता'ज़ीम करने के बजाए इस की बे हुर्मती की और ख़ुदा तआ़ला के ग़ज़ब से बे परवा हो कर गुनाहों में मश्ग़ूल रहा तो उस बद नसीब का किस क़दर भयानक अन्जाम हुवा कि मरने के बा'द वोह अ़ज़ाबे क़ब्र में गिरिफ़्तार हो कर बुरी त़रह़ ज़लीलो रुस्वा हुवा, ग़ौर तो फ़रमाइये कि माहे रमज़ान में रोज़ा रख कर गुनाह करने वालों का जब येह ह़ाल है तो जो नादान मुसलमान बिला वज्हे शरई इस माह में सिरे से रोज़े ही नहीं रखते, खुले आ़म खाते पीते बल्कि مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बिला ख़ौफ़ो ख़त़र गुनाह पर गुनाह किये जाते हैं, तो उन का अन्जाम किस क़दर दर्दनाक होगा, लिहाज़ा अपनी कमज़ोरी पर तरस खाइये, घबरा कर झट पट गुनाहों से हमेशा हमेशा के लिये सच्ची तौबा कीजिये और नमाज़ व रोज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दीजिये। याद रखिये ! कि बिला इजाज़ते शरई माहे रमज़ान के रोज़े न रखना, बहुत बड़ी मह़रूमी का सबब है। आइये ! इस ज़िम्न में 2 फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि दो जहां के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने रमज़ान के एक दिन का रोज़ा बिग़ैर रुख़्सत, बिग़ैर मरज़ न रखा, तो ज़माने भर का रोज़ा भी उस की क़ज़ा नहीं हो सकता अगर्चे बा'द में रख भी ले। (بخاری، کتاب الصوم، باب اذا جامع فی رمضان، ۱/۶۳۸، حدیث: ۱۹۳۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : जिस ने माहे रमज़ान को पाया और उस के रोज़े

न रखे तो वोह शख़्स बदबख़्त है, जिस ने अपने वालिदैन या उस में से किसी एक को पाया मगर उन के साथ अच्छा सुलूक न किया तो वोह भी बदबख़्त है, जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा वोह भी बदबख़्त है । (معجم اوسط،من اسمہ علی، ۳/۶۲،حدیث:۳۸۷۱)

दो जहां की ने'मतें मिलती हैं रोज़ादार को

जो नहीं रखता है रोज़ा वोह बड़ा नादान है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 706)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी हम ने जो ह़दीसे पाक सुनी इस मे रोज़ा ख़ोरों, वालिदैन के ना फ़रमानों और दुरूद शरीफ़ पढ़ने में बुख़्ल से काम लेने वालों के लिये इब्रत के बे शुमार मदनी फूल मौजूद हैं, लिहाज़ा इन कामों में मुब्तला रहने वालों को चाहिये कि आज ही माहे रमज़ान के रोज़े छोड़ने, वालिदैन का दिल दुखाने और दुरूद शरीफ़ के मुआ़मले में कन्जूसी का मुज़ाहरा करने की बुरी आ़दात से पीछा छुड़ा कर अपनी आख़िरत संवार लें । यहां येह मस्अला भी ज़ेह्न नशीन रखिये कि वालिदैन की इत़ाअ़त सिर्फ़ जाइज़ कामों में ही की जा सकती है क्यूंकि ख़िलाफ़े शरअ़ कामों में किसी की इत़ाअ़त करना शरअ़न जाइज़ नहीं । जैसा कि :

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه वालिदैन की इत़ाअ़त के बारे में पूछे जाने वाले एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : जाइज़ बातों में अपने वालिदैन की इत़ाअ़त करना फ़र्ज़ है अगर्चे वोह ख़ुद गुनाहे कबीरा में मुब्तला हों क्यूंकि उन के गुनाह का वबाल उन्हीं पर है और इस के सबब कोई शख़्स भी जाइज़ कामों में उन की इत़ाअ़त से बरियुज़्ज़िम्मा नहीं हो सकता । हां ! अगर वोह किसी नाजाइज़ बात का हुक्म करें (मसलन दाढ़ी कटवाने या एक मुठ्ठी से घटाने, बे पर्दगी करने या नाजाइज़ फ़ैशन अपनाने का कहें) तो इन कामों में उन की इत़ाअ़त करना जाइज़ नहीं । (फ़तावा रज़विय्या, 21 / 157, मुलख़्ख़सन)

आक़ाए नामदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बुन्याद है : لَا طَاعَةَ فِيْ مَعْصِيَةٍ اِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوْفِ **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी में किसी भी शख़्स की इत़ाअ़त (जाइज़) नहीं, फ़रमां बरदारी तो सिर्फ़ नेक कामों में (ही जाइज़) है।

(بخاری، کتاب اخبار الآحاد، باب ماجاء فی اجازۃ خبر الواحد، ۴/۴۹۳، حدیث: ۷۲۵۷)

इसी त़रह़ जब भी मक्की मदनी आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे नामी, इस्मे गिरामी लें या सुनें तो उस वक़्त याद से दुरूद शरीफ़ पढ़ने की आ़दत बनाइये क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्रे ख़ैर के वक़्त दुरूदे पाक न पढ़ने वाले को ह़दीसे पाक में कन्जूस कहा गया है। चुनान्चे,

ताजदारे अम्बिया, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : اَلْبَخِيْلُ الَّذِيْ مَنْ ذُكِرْتُ عِنْدَهٗ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ बख़ील है वोह शख़्स जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े।

(ترمذی، ابواب الدعوات، باب قول رسول اللہ رغم انف رجل، ۵/۳۲۱، حدیث: ۳۵۵۷)

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : उ़म्र में एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है और हर जल्सए ज़िक्र में दुरूद शरीफ़ पढ़ना वाजिब, ख़्वाह ख़ुद नामे अक़्दस ले या दूसरे से सुने और अगर एक मजलिस में सौ बार ज़िक्र आए तो हर बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये, अगर नामे अक़्दस लिया या सुना और दुरूद शरीफ़ उस वक़्त न पढ़ा तो किसी दूसरे वक़्त में उस के बदले का पढ़ ले। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा सिवुम, 1 / 101)

या नबी ! बेकार बातों की हो आ़दत मुझ से दूर

बस दुरूदे पाक की हो ख़ूब कसरत या रसूल

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 242)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किताब "फ़ैज़ाने रमज़ान" का तआरुफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ैज़ाने रमज़ान से माला माल होने, इताअ़ते वालिदैन का जज़्बा पाने और दुरूदो सलाम की आ़दत अपनाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तस्नीफ़ "**फ़ैज़ाने रमज़ान**" का मुत़ालआ़ कीजिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस किताब में रोज़ों, तरावीह़, सह़री व इफ़्त़ार, ए'तिकाफ़, सदक़ए फ़ित्र और ईदुल फ़ित्र वग़ैरा के फ़ज़ाइल व अह़काम को आसान तरीन अन्दाज़ में बयान किया गया है । चूंकि इस माह के रोज़े हम पर फ़र्ज़ हैं, लिहाज़ा इन रोज़ों के शरई मसाइल सीखना भी हमारे लिये ज़रूरी है और "**फ़ैज़ाने रमज़ान**" में रोज़े के उ़मूमी मसाइल व अह़काम मौजूद हैं, लिहाज़ा आज ही इस किताब को मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब फ़रमाइये, ख़ुद भी इस का मुत़ालआ़ कीजिये और दूसरों को भी तरग़ीब दिलाइये । दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, Download और Print Out भी किया जा सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! माहे रमज़ान की एक अ़ज़मत येह भी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शबे क़द्र को इसी महीने में पोशीदा रखा है और शबे क़द्र वोह अ़ज़ीम रात है जिस में की जाने वाली इ़बादत हज़ार महीनों से बेहतर है, इसी मुबारक रात को तलाश करने के लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार पूरे माहे मुबारक का ए'तिकाफ़ फ़रमाया । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि एक मरतबा सुल्त़ाने दो जहान, शहनशाहे कौनो मकान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यकुम रमज़ान से 20 रमज़ान तक ए'तिकाफ़ करने के बा'द इरशाद फ़रमाया : मैं ने शबे क़द्र की तलाश के लिये रमज़ान के पहले अ़शरे का और फिर दरमियानी अ़शरे का ए'तिकाफ़ किया, फिर मुझे बताया गया कि शबे क़द्र आख़िरी अ़शरे में है, लिहाज़ा तुम में से जो शख़्स मेरे साथ ए'तिकाफ़ करना चाहे वोह कर ले । (مسلم، کتاب الصیام، باب فضل لیلۃ القدر...الخ، ص ۵۹۴، حدیث: ۱۱۶۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हर साल न सही तो ज़हे नसीब ! ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार इस अदाए मुस्त़फ़ा को अदा करते हुवे पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक के ए'तिकाफ़ की मदनी बहारें लूटने की भरपूर कोशिश कीजिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ए'तिकाफ़ करने की बे शुमार बरकतें हैं कि जितने दिन मुसलमान ए'तिकाफ़ में रहता है अगर कोशिश करे तो गुनाहों से अपने आप को बचा सकता है नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ास रह़मत है कि बाहर रह कर जो नेकियां वोह किया करता था, ए'तिकाफ़ की ह़ालत में अगर्चे वोह उन को अन्जाम न दे सकेगा मगर फिर भी वोह इस के नामए आ'माल में ब दस्तूर लिखी जाएंगी और इसे उन का सवाब भी मिलता रहेगा । चुनान्चे,

ताजदारे ह़रम, सरापा जूदो करम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तह़फ़्फ़ुज़ निशान है : هُوَيَعْكِفُ الذُّنُوْبَ وَيُجْرٰى لَهٗ مِنَ الْحَسَنَاتِ كَعَامِلِ الْحَسَنَاتِ كُلِّهَا ए'तिकाफ़ करने वाला गुनाहों से बचा रहता है और उसे तमाम नेकियों का सवाब ऐसे ही दिया जाएगा जैसे नेकियां करने वाले को दिया जाता है ।

(ابنِ ماجہ، کتاب الصیام، باب: فی ثواب الاعتکاف، ۲/ ۳۶۵، حدیث: ۱۷۸۱)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान कर्दा ह़दीसे पाक की शर्ह़ करते हुवे फ़रमाते हैं : ए'तिकाफ़ का फ़ौरी फ़ाइदा तो येह है कि येह मो'तकिफ़ को गुनाहों से बाज़ रखता है क्यूंकि अक्सर गुनाह ग़ीबत, झूट, और चुग़ली वग़ैरा लोगों से मेल जोल के बाइस होती है, मो'तकिफ़ दुन्या से किनारा कशी इख़्तियार किये हुवे होता है और जो उस से मिलने आता है वोह भी मस्जिद व ए'तिकाफ़ का लिह़ाज़ रखते हुवे न ख़ुद बुरी बातें करता है, न करवाता है । (मज़ीद फ़रमाते हैं कि) ए'तिकाफ़ की वज्ह से जिन नेकियों से मह़रूम हो गया जैसे ज़ियारते क़ुबूर, मुसलमानों से मुलाक़ात, बीमार की ख़ैरियत मा'लूम करना, नमाज़े जनाज़ा में ह़ाज़िरी वग़ैरा उसे उन सब नेकियों का सवाब इसी त़रह़ मिलता है जैसे येह काम करने वालों को सवाब मिलता है । (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 217, मुल्तक़त़न व मुलख़्ख़सन)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक और शहरों में पूरे माहे रमज़ान और आख़िरी अ़शरे के इजतिमाई ए'तिकाफ़ की तरकीब की

जाती है, जिस में मर्कज़ी मजलिसे शूरा की त़रफ़ से दिये गए जदवल के मुत़ाबिक़ ए'तिकाफ़ करने वाले आ़शिक़ाने रमज़ान की मदनी तरबिय्यत की कोशिश की जाती है, इजतिमाई ए'तिकाफ़ का आग़ाज़ कुछ यूं हुवा कि दा'वते इस्लामी के वुजूद में आने से चन्द साल पहले रमज़ानुल मुबारक में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने नूर मस्जिद कागज़ी बाज़ार, मीठादर बाबुल मदीना (कराची) में तन्हा ए'तिकाफ़ किया, फिर अगले साल आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इनफ़िरादी कोशिश से मज़ीद 2 इस्लामी भाई आप के साथ ए'तिकाफ़ करने के लिये तय्यार हो गए। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मिलनसारी की आ़दत और इनफ़िरादी कोशिशों की बरकत से एक साल ऐसा आया कि मो'तकिफ़ीन की ता'दाद 28 तक पहुंच गई। इस इजतिमाई ए'तिकाफ़ की दूर दूर तक धूम मच गई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उसी साल दा'वते इस्लामी का सूरज तुलूअ़ हो गया और दा'वते इस्लामी के अव्वलीन मदनी मर्कज़ गुलज़ारे ह़बीब मस्जिद (गुलिस्ताने ओकाड़वी, बाबुल मदीना कराची) में दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम पहला इजतिमाई ए'तिकाफ़ किया गया, कमो बेश 60 इस्लामी भाइयों ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की हमराही में ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत पाई, बढ़ते बढ़ते (ता दमे तह़रीर) येह सिलसिला न सिर्फ़ पाकिस्तान बल्कि दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में पहुंच गया है। यूं दुन्या की बे शुमार मसाजिद में पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक के और आख़िरी अ़शरे के इजतिमाई ए'तिकाफ़ का एहतिमाम किया जाता है जिन में हज़ारहा इस्लामी भाई मो'तकिफ़ हो कर दीगर इ़बादात के साथ साथ इ़ल्मे दीन ह़ासिल करते और सुन्नतों की तरबिय्यत पाते हैं नीज़ कई मो'तकिफ़ीन इख़्तितामे रमज़ानुल मुबारक पर चांद रात ही से आ़शिक़ाने रसूल के साथ, 1 माह, 12 दिन और 3 दिन के लिये सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बन जाते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कई आ़शिक़ाने रमज़ान, इस ए'तिकाफ़ की बरकतों और मदनी बहारों को मज़ीद समेटने के लिये हाथों हाथ **63 रोज़ा मदनी तरबिय्यती कोर्स, 41 रोज़ा मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स,**

12 रोज़ा मदनी कोर्स भी करने की सआ़दत ह़ासिल करते हैं। हमें भी इन अ़ज़ीम सआ़दतों से हि़स्सा पाने की भरपूर कोशिश करनी चाहिये। मश्वरा है कि आज ही किसी ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से राबित़ा कर के इजतिमाई ए'तिकाफ़ का फ़ॉर्म ह़ासिल कीजिये और अच्छी त़रह़ पढ़ कर उसे पुर कर के जम्अ़ करवा दीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में हज़ारों आ़शिक़ाने रसूल पूरे माहे रमज़ान और आख़िरी अ़शरे के ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल करते हैं, जो आ़शिक़ाने रमज़ान आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बते बा बरकत में ए'तिकाफ़ करने के ख़्वाहिश मन्द हों, वोह मुतअ़ल्लिक़ा निगराने डिवीज़न मुशावरत या निगराने काबीना की इजाज़त से अपना फ़ॉर्म जल्द जम्अ़ करवा दीजिये ताकि ताख़ीर की सूरत में जगह की कमी की वज्ह से कोई आज़माइश न हो। इजतिमाई ए'तिकाफ़ की भी ख़ूब मदनी बहारें हैं। आइये ! बत़ौरे तरग़ीब इजतिमाई ए'तिकाफ़ की एक मदनी बहार सुनते हैं। चुनान्चे,

जैसे मेरे सरकार हैं, ऐसा नहीं कोई

ज़म ज़म नगर ह़ैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध, पाकिस्तान) के एक इस्लामी भाई अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अ़त्तारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जो कि टन्डो जाम की एक यूनीवर्सिटी के लेब इन्चार्ज थे, इन के दो बच्चे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे मगर वोह ख़ुद नमाज़ों और सुन्नतों से दूर थे और ज़ेह्न मुकम्मल त़ौर पर दुन्यादारों वाला था। रमज़ानुल मुबारक में इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे उन्हें इजतिमाई ए'तिकाफ़ में शिर्कत की दा'वत पेश की गई तो फ़रमाने लगे : मेरे बच्चों की अम्मी नाराज़ हो कर मैके जा बैठी हैं, अगर मैं ए'तिकाफ़ करूंगा तो वोह आ जाएंगी ? उन्हें बताया गया, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ आ जाएंगी, चुनान्चे, वोह आख़िरी अ़शरा रमज़ानुल मुबारक (ग़ालिबन सिने 1416 हि. ब मुत़ाबिक़ सिने 1995 ई.) में ज़म ज़म नगर ह़ैदराबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के फ़ैज़ाने मदीना में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ हो गए। सीखने सिखाने के ह़ल्क़ों, सुन्नतों भरे बयानात, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं

और पुर सोज़ ना'तों ने उन के क़ल्ब में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया । उन्हों ने गुनाहों से तौबा कर ली, नमाज़ों की पाबन्दी का अ़ह्द किया, दाढ़ी मुबारक व इमामा शरीफ़ से आरास्ता हो गए और ना'तें भी पढ़ने लगे । ए'तिकाफ़ के दौरान ही रूठी हुई बच्चों की अम्मी भी वापस आ गईं और घरेलू शकर रंजियां भी ख़त्म हो गईं । ए'तिकाफ़ की बरकत से वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए । दाढ़ी, ज़ुल्फ़ों, इमामा शरीफ़ और मदनी लिबास में नज़र आने लगे, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी किया और मदनी माह़ोल में रहते हुवे उसी साल या'नी बरोज़ जुमा'रात 27 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ ग़ालिबन सिने 1416 हि. ब मुत़ाबिक़ सिने 1995 ई. को उन का इन्तिक़ाल हो गया, اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيۡهِ رَاجِعُوۡن । उन की ख़ुश बख़्ती तो देखिये कि ब वक़्ते वफ़ात उन के लब पर ना'त शरीफ़ का येह मिस्रअ़ था कि :

जैसे मेरे सरकार हैं ऐसा नहीं कोई

जल्वए यार की आरज़ू है अगर — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मीठे आक़ा करेंगे करम की नज़र — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
चोट खा जाएगा इक न इक रोज़ दिल — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़ज़्ले रब से हिदायत भी जाएगी मिल — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तुम को राह़त की ने'मत अगर चाहिये — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
बन्दगी की भी लज़्ज़त अगर चाहिये — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तंगदस्ती का ह़ल भी निकल आएगा — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रोज़गार اِنْ شَآءَاللّٰه मिल जाएगा — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
सीखने ज़िन्दगी का क़रीना चलो — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
देखना है जो मीठा मदीना चलो — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मौत फ़ज़्ले ख़ुदा से हो ईमान पर — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रब की रह़मत से जन्नत में पाओगे घर — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
होगा राज़ी ख़ुदा, ख़ुश शहे अम्बिया — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
*मान भी जाओ **अ़त्तार** की इल्तिजा — मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 639 ता 645)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जामिअ़तुल मदीना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों और दीगर नेक कामों पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां ह़ासिल होंगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी ता दमे तह़रीर कमो बेश 103 शो'बाजात में सुन्नतों की ख़िदमत में मस्रूफ़े अ़मल है, इन्हीं में से एक शो'बा जामिअ़तुल मदीना भी है।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه की दीली ख़्वाहिश के तह़्त इ़ल्मे दीन को आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम जामिअ़तुल मदीना की सब से पहली शाख़ 1995 ई. में न्यू कराची के अ़लाक़े गोधरा कॉलोनी बाबुल मदीना (कराची) में खोली गई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब तक दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक मसलन पाकिस्तान, हिन्द, जुनूबी अफ़्रीक़ा, इंग्लेन्ड, नेपाल और बंगलादेश वग़ैरा में जामिअ़तुल मदीना लिलबनीन और लिलबनात क़ाइम हैं, जिन में हज़ारों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर के न सिर्फ़ अपनी इ़ल्मी प्यास बुझा रहे हैं बल्कि दूसरों को भी फ़ैज़ाने इ़ल्म से मुनव्वर करने में मस्रूफ़ हैं। इन जामिअ़तुल मदीना की ख़ुसूसिय्यत येह है कि दीनी ता'लीम से आरास्ता करने के साथ साथ त़लबा की अख़्लाक़ी और रूह़ानी तरबिय्यत भी की जाती है, लिहाज़ा हमें भी अपनी औलाद को जामिअ़तुल मदीना में दाख़िल करवा कर उन की और अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर बनाने की कोशिश करनी चाहिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जामिअ़तुल मदीना (लिलबनीन) या'नी इस्लामी भाइयों के जामिअ़तुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना (लिलबनात) या'नी इस्लामी बहनों के जामिअ़तुल मदीना में दाख़िले जारी हैं और 10 शव्वालुल मुकर्रम 1437 हि., (मुतवक़्क़ेअ़ 16 जूलाई 2016 ई.) तक दाख़िले जारी रहेंगे। दाख़िलों के ख़्वाहिश मन्द अपने अपने शहरों के जामिअ़तुल मदीना लिलबनीन व लिलबनात में हाथों हाथ राबित़ा कीजिये।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का खुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज हम ने इस्तिक़्बाले रमज़ान के बारे में सुना कि :

- हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस माहे मुबारक की आमद से पहले ही सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के सामने इस माहे मोहतरम की शानो अज़मत बयान फ़रमाते और रोज़े रखने और तरावीह पढ़ने की तरग़ीब बयान फ़रमाते ।
- इस में हमारे लिये भी तरग़ीब है, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि इस माहे मुबारक का इस अज़ीमुश्शान तरीक़े से इस्तिक़्बाल करें कि गुनाहों से हमेशा के लिये सच्ची तौबा कर लें, ख़ूब नेकियां करें, नमाज़ों की पाबन्दी करें, तरावीह का ख़ूब एहतिमाम करें और ख़ूब ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात करें बल्कि हो सके तो अपने सदक़ाते वाजिबा और नाफ़िला के साथ साथ अपने रिश्तेदारों, दोस्तों और महल्लेदारों से भी दा'वते इस्लामी के लिये मदनी अतिय्यात जम्अ करने की कोशिश करें ।
- اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह सब नेक काम हैं और माहे रमज़ानुल मुबारक में एक नेकी का सवाब सत्तर गुना मिलता है, यूं اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ देखते ही देखते हमारे नामए आ'माल में नेकियों का अम्बार लग जाएगा, इस माहे मुबारक ही में शबे क़द्र जैसी अज़ीम रात भी है, जिस में इबादत करने वालों को ज़बरदस्त अज्रो सवाब अता किया जाता है ।
- क़ुरआनो हदीस में इस अज़मत वाली रात को हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल क़रार दिया गया है, इसी शबे क़द्र की तलाश में हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ए'तिकाफ़ फ़रमाते बल्कि एक

मरतबा तो पूरे माहे रमज़ानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ भी फ़रमाया, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत पर अ़मल करते हुवे ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार तो पूरे माह के ए'तिकाफ़ की सआ़दत लाज़िमी ह़ासिल करें, बल्कि तमाम इस्लामी भाई कोशिश करें कि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में पूरे माह का ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत ह़ासिल करें, इस की बरकत से ख़ूब ख़ूब इ़ल्मे दीन सीखने को भी मिलेगा, अ़मल का जज़्बा भी बढ़ेगा, आसानी से इ़बादत भी कर सकेंगे और गुनाहों से भी मह़फ़ूज़ रहेंगे। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ الصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، الفصل الثانی، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵)

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह़ जब निकल कर
चले तुम गले लगाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 428)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

छींकने की सुन्नतें और आदाब

आइये ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**101 मदनी फूल**" से छींकने की चन्द सुन्नतें व आदाब सुनते हैं :

पहले दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों :

❖ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को छींक पसन्द है और जमाही ना पसन्द ।

(بخاری، ۴/۱۶۳، حدیث: ۶۲۲۶)

❖ जब किसी को छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे तो फ़िरिश्ते कहते हैं : رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ और अगर वोह رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ कहता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए । (معجم کبیر، ۱۱/۳۵۸، حدیث: ۱۲۲۸۴)

❖ छींक के वक़्त सर झुकाइये, मुंह छुपाइये और आवाज़ आहिस्ता निकालिये, छींक की आवाज़ बुलन्द करना ह़माक़त (या'नी बे वुक़ूफ़ी) है । (ردّ المحتار، ۹/۶۸۴)

❖ छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना चाहिये, बेहतर है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن या اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ حَال कहे ❖ सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन یَرحَمُکَ الله (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए) कहे और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला ख़ुद सुन ले । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, 3 / 476)

❖ जवाब सुन कर छींकने वाला कहे : یَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَکُمْ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे : یَھْدِیْکُمُ اللهُ وَیُصْلِحُ بَالَکُمْ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे)

(फ़तावा हिन्दिया, 5 / 326)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

*रहूं हर दम मुसाफ़िर काश ''**मदनी क़ाफ़िलों** '' का मैं*
करम हो जाए मौला गर ! इनायत येह बड़ी होगी

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 393)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआएं

﴾1﴿ **शबे जुमुआ़ का दुरूद :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

﴾2﴿ **तमाम गुनाह मुआ़फ़ :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ٦٥)

﴾3﴿ **रह़मत के सत्तर दरवाज़े :** صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص ٢٧٧)

﴾4﴿ **दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج٢ ص٣٢٩، حدیث ٣١)

《5》 छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

हज़रते अहमद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** हासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

《6》 कुर्बे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है !!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

गोया शबे क़द्र हासिल कर ली

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने इस दुआ़ को 3 मरतबा पढ़ा तो गोया उस ने शबे क़द्र हासिल कर ली । (تاریخ ابنِ عساکر، ۱۹/۱۵۵، حدیث: ۴۴۱۵)

दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए हलीम व करीम के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवरदगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. **1163-1164**